

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.), कोलकाता

सजल



अंक - 1



अंक - 2



अंक - 3



सजल अंक - 4

भारत का संविधान
भाग XVII अनुच्छेद 343(1)

संघ की राजभाषा
हिन्दी और लिपि
देवनागरी होगी।

THE CONSTITUTION
OF INDIA
PART XVII ARTICLE 343(1)

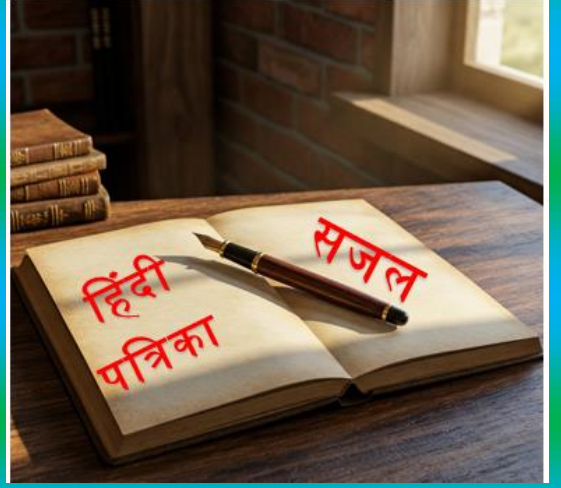
The official language
of the Union shall
be Hindi in
Devnagari script.

हिन्दी दिवस



प्रकाशक

मुख्यालय
तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व)
6वाँ तल, सिंथेसिस बिजनेस पार्क
न्यू टाउन राजरहाट
कोलकाता - 700161



संपादक - मंडल



उप महानिरीक्षक महेन्द्र सिंह रावत
मुख्य स्टाफ अधिकारी (कार्मिक एवं प्रशा.)



श्री आलोक कुमार राय
असैन्य कार्मिक अधिकारी
क्षेत्रीय हिन्दी अधिकारी



सुश्री एकता गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी



महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, त.प.
कमांडर, तटरक्षक (उ.पू.)

संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष की बात है कि तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.), कोलकाता द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका 'सजल' के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी हमारे हृदय की, संवेदनाओं, संस्कार एवं संवाद की भाषा है। इस पत्रिका के माध्यम से हम हिंदी के प्रति अपनी निष्ठा को अभिव्यक्त कर रहे हैं तथा अपनी संस्कृति और विचारधारा को सशक्त रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय में कार्यप्रणाली के विभिन्न स्तरों पर हिंदी के प्रयोग में निरंतर प्रगति हो रही है। प्रशासनिक कार्यों, पत्राचार, बैठकों, प्रशिक्षणों एवं आंतरिक संवाद में हिंदी का प्रभावी रूप से उपयोग, अब एक सशक्त और सकारात्मक परंपरा बनती जा रही है। इस दिशा में हिंदी अनुभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित हिंदी कार्यशालाओं, प्रोत्साहन योजनाओं और प्रतियोगिताओं ने कर्मचारियों में भाषा के प्रति जागरूकता और आत्मीयता को बढ़ावा दिया है। साथ ही, कार्यालय में प्रयुक्त शब्दों के सहज उपयोग एवं सरल भाषा शैली को अपनाकर, हिंदी को कार्यान्वयन की भाषा के रूप में भी सशक्त किया गया है। यह पत्रिका उसी यात्रा की एक कड़ी है, जो न केवल हमारी रचनात्मकता को दर्शाती है, बल्कि हमारे इस संकल्प को भी रेखांकित करती है कि – "हिंदी केवल संपर्क की नहीं, बल्कि कार्य की भी भाषा बने"।

राष्ट्र की प्रगति के लिए जरूरी है कि हम अपनी क्षेत्रीय भाषाओं सहित हिंदी भाषा को भी अधिक से अधिक बढ़ावा दें। हिंदी के प्रयोग को केवल कार्यालय तक ही सीमित न रखें बल्कि आम जीवन में भी हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करें। हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की आत्मा है जो पूरे देश को एक सूत्र में जोड़े रखती है।

मैं इस अवसर पर संपादक-मंडल एवं सभी रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों को प्रेरित करेगी और हिंदी को इस संगठन में और अधिक मजबूती प्रदान करेगी।

(इकबाल सिंह चौहान)
महानिरीक्षक
कमांडर
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)



उप महानिरीक्षक हिमांशु नौटियाल, त.प.
स्टाफ प्रमुख

संदेश

“शब्दों में संवेदना, संस्कारों में संगठन”

मेरे लिए गर्व का विषय है कि तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) की हिंदी पत्रिका “सजल” का नवीनतम अंक आपके समक्ष है। हमारे कार्यालय की यह हिंदी पत्रिका एक प्रयास है – विचारों, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों में ढालने का, ताकि न केवल हमारे संगठन की गतिविधियों की झलक मिले, बल्कि हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारियों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को भी साझा कर सकें।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा की वाहक भी है। ऐसे में इस प्रकार के प्रयास, न केवल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान देते हैं, बल्कि कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को मंच देने का कार्य भी करते हैं।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में इस कार्यालय ने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। विभिन्न कार्यशालाओं, संक्रिया एवं अन्य बैठकों में हिंदी भाषा का सरलता से प्रयोग करके अधिकारियों एवं कर्मिकों को दैनिक जीवन एवं सरकारी कामकाज में हिंदी प्रयोग के प्रति सजग तथा प्रोत्साहित किया गया है, जिससे कर्मचारियों में न केवल आत्मविश्वास बढ़ा है बल्कि कार्य की गति और सहजता भी बढ़ी है। यह प्रगति हिंदी को केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि संस्था की कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बना रही है।

मैं संपादक -मंडल, सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को उनके अथक परिश्रम एवं समर्पण के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। निश्चय ही यह अंक हिंदी पत्रिका “सजल” की परंपरा को उत्कृष्टता की ओर ले जा रहा है, जो कि इस संगठन की विविधता में परिपूर्णता, बहुआयामी कार्य प्रणाली, कौशल तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का द्योतक है।

आशा है कि यह अंक हमारी भाषा, संस्कृति एवं संस्था के मूल्यों को और सशक्त बनाएगा तथा सभी पाठकों को पसंद आएगा।

हिमांशु नौटियाल

(हिमांशु नौटियाल)
उप महानिरीक्षक
स्टाफ प्रमुख
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)



सम्पादक की कलम से



उप महानिरीक्षक महेन्द्र सिंह रावत
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का/ प्र)

संदेश

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) की हिंदी पत्रिका "सजल" का अंक-4 प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका केवल लेखों और विचारों का संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारे संगठन की संस्कृति, समर्पण और रचनात्मकता का जीवंत प्रतीक है। इस अंक में हमने विविध विषयों को समाहित करने का प्रयास किया है – सामाजिक सरोकारों से लेकर सांस्कृतिक चेतना तक और नवाचार से लेकर संगठन की गतिविधियों तक। हिंदी के लिए समर्पित हमारी यह चौथी प्रस्तुति विचारों, भावनाओं और रचनात्मकता का संगम है।

हिंदी हमारे विचारों को स्वर देने वाली आत्मा है। आज के वैश्वीकरण के दौर में भी हिंदी की प्रासंगिकता और प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। हिंदी भाषा हमारी सांस्कृतिक विरासत की धरोहर है। इस पत्रिका के माध्यम से हम उसके संवर्धन और प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाने का प्रयास कर रहे हैं व हम भाषा, साहित्य और सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने का संकल्प दोहराते हैं। आइए मिलकर यह संकल्प लें कि हम न केवल हिंदी का प्रयोग करें, बल्कि इसकी गरिमा को आगे बढ़ाने में भी सक्रिय भूमिका निभाएँ।

हमारे सदस्यों का उत्साह, रचनाकारों की रचनात्मकता और पाठकों की सराहना ही ऐसे प्रयासों की असली ताकत है। हम हृदय से उन सभी का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस अंक को साकार करने में सहयोग किया।

"सजल" के अंक-4 के लिए मैं बधाई देता हूँ एवं इस पत्रिका के सफल विमोचन हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।

(महेन्द्र सिंह रावत)
उप महानिरीक्षक
मुख्य स्टाफ अधिकारी (का/ प्र)
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	आत्मविश्वास बनाम अहंकार	1
2	रिश्ते	2
3	नन्हें कदमों का आगमन	3
4	नजर-अंदाज	4
5	भारतीय तटरक्षक बल	5-6
6	झुके-झुके स्कूली बच्चें	7
7	मैं डरती हूँ	8-9
8	हिंदी हमारा अभिमान	10
9	मेरा देश	11
10	चलो मुस्कुराने की वजह ढूँढते हैं	12
11	सर्दियों की धूप	13
12	प्रकृति प्रेम	14
13	तटरक्षक	15
14	गंगा सागर मेला 2025 में भारतीय तटरक्षक बल की समर्पित सेवा	16
15	फ्रेज़रगंज : एक परिचय	17
16	पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल	18
17	मेरा गाँव	19-20

18	राजस्थानी संस्कृति	21
19	बेटी की बिदाई	22
20	सरहद पर फौजी	23
21	वीर जवान	24
22	लिखना : आत्म-अभिव्यक्ति और विचारों की स्पष्टता	25-26
23	मन	27
24	POSDCORB सिद्धांत और व्यक्तिगत जीवन में इसकी उपयोगिता	28-29
25	यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है	30
26	आत्मनिर्भर भारत पर निबंध	31-32
27	स्वच्छ समुद्र तटों की ओर एक सशक्त कदम	33
28	यादों की चादर	34
29	जीवन – एक कहानी, जिसे सहेजना जरूरी है	35
30	गुल्लक से चंद अल्फाज़	36
31	तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की विभिन्न गतिविधियाँ	37-56
32	तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की झलकियाँ	57-63
33	राजभाषा संबंधी लिंक	64

आत्मविश्वास बनाम अहंकार

“मैं श्रेष्ठ हूँ” यह आत्मविश्वास है,
लेकिन “सिर्फ मैं ही श्रेष्ठ हूँ”
यह अहंकार है।

इच्छा पूरी नहीं होती,
तो क्रोध बढ़ता है
और इच्छा पूरी होती है,
तो लोभ बढ़ता है।

इसलिए जीवन की
हर स्थिति में धैर्य समाधान
बनाए रखना ही श्रेष्ठता है।



हिरेमठ विरेश, समादेशक (क. व.)
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

रिश्ते

परिचय के दो दिन

स्मृति उसकी है छाया ।

दूर जाने पर मिट जाती है

रह जाती है माया ।


कभी - कभी रिश्ते निभाये नहीं जाते हैं

कई बार यह जिंदगी भर रह जाते हैं ।

पर जिस दिन हम रिश्तों के लिए जीयेंगे

तब वह जीवन यादगार बन जायेगा ।



 कौशिक साहा, ड्राफ्टमैन
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

नन्हें कदमों का आगमन

तेरे आने से पहले

शुभ कदमों ने तेरे आने का आगाज़ दिया था
तू अपने नाम-सी, एक तोहफ़ा है हम सब के लिए
तेरे आने से जीवन में तुझ-सी ही समृद्धि आई है।
तेरे नन्हें कदमों के आगमन से,
वापसी हुई है किसी की ।



आँखें तेरी ना जाने क्या-क्या कहती हैं...

कभी मुस्कान, कभी रुदन
कभी खिलखिलाहट, कभी करुण क्रंदन
बेसुध, निश्छल, मासूम ना जाने कितने भाव भरे रखती हैं।



✍ एकता गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)



नजर-अंदाज

नजर-अंदाज करना सीखिये
कुछ गलतियों को, किसी की बातों को,
कभी जलती धूप तो कभी अंधेरी रातों को,
चकाचौंध में है जमाना आसमानी रंगों से,
आप भी स्वयं में प्रकाश भरना सीखिये,
कब तक खुद को जकड़ेंगे दूसरों की नजरों में
अपने मन को आज़ाद करना सीखिये,
नजर-अंदाज करना सीखिये।

बहुत कुछ चलता है भटकते हुए मन में
बहुत सी कहानियाँ है इस लम्बे से जीवन में,
कब तक चुपचाप रहेंगे बुत बनकर,
बात करना सीखिये, मुलाकात करना सीखिये,
नजर-अंदाज करना सीखिये।।



✍ कपिलदेव कुमार, अ. श्रे.लि.
भारतीय तटरक्षक अवस्थान कोलकाता

भारतीय तटरक्षक बल

भारत तेरी शान निराली
भारत तेरी पहचान निराली
हम बच्चें उस माता के
जिसकी गाथा गाती दुनिया सारी

करते रक्षा देश की
कहलाते समुद्रों के रक्षक
हम हैं हम हैं
भारतीय तटरक्षक

इंसानियत के दोस्त हम
दुश्मनों के दुश्मन
न टकराना हमसे
लड़ेंगे जब तक है हिम्मत

खून का कतरा-कतरा बहाएंगे
अपने देश को हम स्वर्ग बनाएंगे
जीवों की रक्षा के लिए तत्पर
हम हैं हम हैं
भारतीय तटरक्षक




पहचान हमारी निडरता
लहरों से टकराते हम
मातृभूमि की रक्षा के लिए
अपना कतरा-कतरा बहाते हम

चाहे हो पूर्व
चाहे हो पश्चिम
सर्वत्र हमारी पहचान
देश-विदेश में है ख्याति जिसकी
ये हमारा अभिमान

सिपाही हम देश के
जान न्यौछावर करते हैं
तिरंगे की शान के लिए
सर्वत्र कुरबान करते हैं

हम हैं हम हैं
भारतीय तटरक्षक



 आदर्श कुमार, यु एस ई (ई आर)
तटरक्षक मरम्मत और उत्पादन दल (पारादीप)



झुके-झुके स्कूली बच्चें

अच्छी थी पगडंडी अपनी।
सड़कों पर तो जाम बहुत है॥

फुर्र हो गई फुर्सत अब तो।
सबके पास काम बहुत है॥

नहीं जरूरत बूढ़ों की अब।
हर बच्चा बुद्धिमान बहुत है॥

उजड़ गए सब बाग बगीचे।
दो गमलों में शान बहुत है॥

मट्ठा, दही नहीं खाते हैं।
कहते हैं जुकाम बहुत है॥

पीते हैं जब चाय तब कहीं।
कहते हैं आराम बहुत है॥


बंद हो गई चिट्ठी, पत्री।
फोनों पर पैगाम बहुत है॥

आदी हैं ए.सी. के इतने।
कहते बाहर घाम बहुत है॥

झुके-झुके स्कूली बच्चें।
बस्तों में सामान बहुत है॥

सुविधाओं का ढेर लगा है।
पर इंसान परेशान बहुत है॥



 धर्मेन्द्र कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

मैं डरती हूँ

मैं डरती हूँ,
मुझे लगा
कुछ बुदबुदायी
साफ सुन पाती उससे पहले ही
उसने फिर कहा
पिछली बार से कुछ ज्यादा तेजी के साथ,
हाँ मैं डरती हूँ,
एक अचम्भित-सी दृष्टि मैंने उस पर डाली,
उसने कहा,
हां, तुमने ठीक सुना,
मैंने कहा - मैं डरती हूँ,
मैं कुछ समझ पाती,
शब्दों के काफिले सजा, कुछ कह पाती,
उससे पहले ही शब्द निकल पड़ें,
कब? क्यों?
ये सुन,
उसने झट पूछा - सुन सकोगी तुम?
शायद वो मेरी अधीरता जानती थी,
मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर
उसने कहना शुरू किया...
शायद वो मेरी उत्सुकता को भांप रही थी,

हां, मैं डरती हूँ
उसने फिर दोहराया,
जैसे मुझे पूर्व सूचित कर रही हो,
आगे की कथा के श्रवन योग्य बना रही हो,
मैं डरती हूँ,
एक आहट से,
पत्तों की सरसराहट से,
कभी अँधेरे से,
तो कभी उजाले से,
मैं डरती हूँ,
कभी यूँ ही रिश्ते बन जाने से,
तो कभी यूँ ही उनके टूट कर बिखर जाने से,
कभी अचानक किसी के आ जाने से,
तो कभी किसी के दूर चले जाने से,
मैं डरती हूँ
रिश्तों में प्रगाढ़ता बढ़ जाने से,
तो कभी रिश्तों के बिखर जाने से,
दुख के आने से,
तो कभी एक साथ कई खुशियां मिल जाने से,
कहते - कहते उसने एक दृष्टि मुझ पर डाली,
मेरे धैर्य का परीक्षण कर रही हो जैसे,

कुछ आश्चस्त-सी
उसने फिर कहना शुरू किया...
मैं डरती हूँ,
राहों पर चल रही भीड़ से
तो कभी राह के सत्राटे से
कभी अपनी विफलता से
तो कभी सफलता से
उसने फिर एक दृष्टि मुझ पर डाली,
इस बार मेरी भी दृष्टि उस पर पड़ी,
और ज्यों ही दोनों की नज़रें मिली,
बिना पूर्व सूचना के,
मेरे होठों से चंद बिखरे-बिखरे से शब्द फूट पड़े,
"हा तो फिर",

एक क्षण वो मौन रही,
फिर अधरों को हिला थोड़ा मुस्कुराई,
जैसे मेरी असमंजसता को वो जान रही थी,
उसकी इस प्रतिक्रिया को देख,
मैंने फिर दोहराया
"हां तो फिर" ????
उसके अधर फिर थोड़ा हिले
जैसे इसी उत्सुकता की प्रतीक्षा में वो हों
एक गहरी सांस ली उसने
और कहा,
"फिर भी मैं आगे चलती हूँ"।



एकता गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)



हिंदी हमारा अभिमान

कथा, बोली एवं वचन से
होती है पहचान
जग में न कोई दूसरा
हिंदी है हमारा अभिमान

मातृ भाषा से बढ़कर
जोड़े पूरे देश को
संजोह-संजोह कर हर अक्षर
देती पहचान देश-विदेश को

संस्कृत है जिसकी जननी
जिससे बढ़ता प्रेम एवं सौहार्द
मेल-मिलाप से बढ़कर
विश्व में दिलाए सम्मान

अटल जी ने हिंदी को
पहुँचाया संयुक्त राष्ट्र तक
किन्तु आज के समय में
हम ना पहुँच पाए हिंदी के पुस्तक पाठ तक

जागो देशवासियों
हिंदी को सम्मान दो
यह न सिर्फ एक भाषा है
हिंदी को पुनः पहचान दो

हिंदी से अस्तित्व हमारा
भविष्य हमारी सुनिश्चित करें
जन-जन तक हिंदी का ज्ञान देकर
अपने कर्तव्य पूर्ण करें ।



 बलजीत सिंह, यू एस ई (एस डब्ल्यू)
तटरक्षक मरम्मत और उत्पादन दल (पारादीप)



हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल
पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अवली श्रेणी
में समासीन हो सकती है.

— मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं


मेरा देश

हमारे देश की मिट्टी निराली
निराली है इसकी शान
निराली है इस देश की गाथा
रक्षा करते हैं इसकी, वीर जवान

मातृभूमि की शान में
एक गीत मैं गाऊँ
हर कण में बसी है
वीरता की कहानी
उसे मैं सुनाऊँ


गर्व है इस मिट्टी पर
गर्व है इस धरती पर
गर्व है मुझे अपने तिरंगे पर
गर्व से यह कहता हूँ
मैं इस देश का हूँ और यह है मेरा देश ।



 मोहम्मद अबू कमर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय-7, पारादीप

चलो मुस्कुराने की वजह ढूँढते हैं

चलो मुस्कुराने की वजह ढूँढते हैं।
तुम हमें ढूँढो हम तुम्हें ढूँढते हैं
कई अफ़साने है मुस्कुराने के लिए
यादों में ही सही वो याद ढूँढते हैं
गम भी है बहुत यहाँ हर मोड़ पर
आओ वहाँ थोड़ी खुशी की आस ढूँढते हैं
कोई हँसता और हँसाता है
ज़ख्मों पर मरहम लगाता है
मंजिल मिलेगी ही एक दिन
चलो हम खुशी से वो राह ढूँढते हैं
रोने से कुछ हासिल हो जाये
ये मुमकिन तो नहीं
यूँ ही सब कुछ मिल जाये
ये ज़रूरी भी नहीं
मेहनत ही रंग लाएगी ज़िन्दगी में आओ
थोड़ी हँसी की वो वजह ढूँढते हैं ।

 रविन्द्र कुमार, प्रधान नाविक
भारतीय तटरक्षक पोत अमोघ



सर्दियों की धूप

सर्दियों की धूप जैसे हो तुम, आगोश में लेते ही सुस्ताने पर मजबूर कर देते हो।

बैठ जाऊं कुछ देर अगर सोहबत में तुम्हारी, तो आंखे बंद करके करीब आने पर मजबूर कर देते हो।

जाना चाहूँ दूर तुमसे तो ठहर जाते हैं आँसू पलकों पर,
करीब आऊँ तो सारा समां पिघलने पर मजबूर कर देते हो।

सूख जाती है नमी आंखों की, छूने से तुम्हारे और
सारे गम भुलाकर मुस्कुराने पर मजबूर कर देते हो।

सर्दियों की मीठी धूप जैसे ही रहना तुम,
क्योंकि आसान नहीं है भीगे तकिए पर नम आँखों से सोना हर रात,
तुम ही हो, जो हर सुबह मुस्कुराने पर मजबूर कर देते हो।



✍ अविनाश कुमार, फोरमैन स्टोर
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

प्रकृति प्रेम

हरी-भरी वादियाँ, सुन्दर ये नजारें,
कल-कल बहते झरने, मन को प्यारे।
चहकते परिन्दें, लहराती हवाएँ
धरती की गोद में जीवन मुस्काए।
फूलों की खुशबू, नदियों की कल-कल,
हरियाली से महके ये दुनिया पल-पल।
आओ मिलकर इसे
सुरक्षित बनाएँ,
प्रकृति के रंगों को और निखारें।
जन गण मन की अभिलाषा का
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का
आराधना अपनी भाषा की।



नितिन, नाविक (एस ए)
भारतीय तटरक्षक पोत कमला देवी



तटरक्षक

मैं एक जवान हूँ,
शूर-वीर खूंखार हूँ।
भारत माँ की सुरक्षा में,
समुद्र-तट पर तैनात हूँ ॥



मैं एक जवान हूँ,
शूर-वीर खूंखार हूँ।
हिंद, बंगाल, अरब सागर में,
चप्पे-चप्पे मुस्तैद हूँ ॥

समुद्री बेड़ों और वायु जत्थों के साथ,
समुद्री सीमा में ही विद्यमान हूँ।
भारत माँ की सुरक्षा में,
दिन-रात तत्पर और तैनात हूँ ॥
वयम् रक्षामः का संकल्प लिए
दुश्मनों का काल (यमराज) हूँ।
मैं इस देश का सेवक,
भारतीय तटरक्षक का जवान हूँ।



✍ मिथलेश कुमार, यांत्रिक (ए आर)
भारतीय तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर




गंगा सागर मेला 2025 में भारतीय तटरक्षक बल की समर्पित सेवा

गंगा सागर मेला, जो प्रतिवर्ष सागर द्वीप पर आयोजित होता है, भारत के सबसे बड़े और पवित्र तीर्थ आयोजनों में से एक है। यह मेला नागा साधु, सन्यासी, तीर्थ यात्री, सभी को मिलाकर एक अद्वितीय माहौल होने के कारण, करोड़ों श्रद्धालुओं को देश के कोने-कोने से आकर्षित करता है, जो गंगा और सागर के संगम पर आस्था की डूबकी लगाने आते हैं। विशेष रूप से मकर संक्रांति के दिन, लाखों श्रद्धालु संगम में डूबकी लगाकर अपने आप को धन्य महसूस करते हैं। स्नान के बाद श्रद्धालु वहाँ स्थित कपिल मुनि मंदिर दर्शन के लिए जाते हैं। एक श्रद्धालु के रूप में, इस दिव्य अनुभव का हिस्सा बनना अत्यंत सुखद और आध्यात्मिक होता है। लाखों लोगों की भीड़ का प्रबंधन, ठहरने, सुरक्षा, जल एवं स्वास्थ्य की व्यवस्था करना चुनौतिपूर्ण कार्य है।

गंगा सागर मेला 2025 के दौरान, इस विशाल आयोजन की सुरक्षा और संचालन सुनिश्चित करने हेतु भारतीय तटरक्षक बल द्वारा भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज के कमान अधिकारी को "ऑन सीन कमांडर" नियुक्त किया गया। उन्हें इस मेले के दौरान सभी इकाइयों के संचालन और प्रशासनिक नियंत्रण की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इसमें राहत एवं बचाव दल (CG Rescue Team) और एयर कुशन व्हीकल्स (ACVs) की तैनाती भी शामिल थी, जो आपात स्थिति में त्वरित सहायता प्रदान करने के लिए सजग रहें। बचाव दलों के साथ समन्वय भी किया गया, जिससे बचाव कार्य सुगमता से किया जा सके। मेले के दौरान भारतीय तटरक्षक बल द्वारा समुद्र के किनारे, स्नान घाट के पास एक अस्थायी टेंट भी स्थापित किया गया, जहाँ से संपूर्ण संचालन की निगरानी की गई। इस विशाल मेले में जहाँ श्रद्धालु आत्मिक शांति की खोज में आते हैं, वहीं भारतीय तटरक्षक बल अपनी सतर्कता, समर्पण और सेवा भावना से यह सुनिश्चित करता है कि हर एक श्रद्धालु सुरक्षित वातावरण में अपना धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कर सके।

गंगा सागर मेला का यह अनुभव केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि एक सुरक्षित और संगठित आयोजन का जीवंत उदाहरण भी बन गया, जिसमें भारतीय तटरक्षक बल की भूमिका सराहनीय रही जिसकी प्रशंसा पश्चिम बंगाल सरकार के द्वारा भी की गई।



 कुन्दन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
भा.त.र.अव. फ्रेज़रगंज

फ्रेज़रगंज : एक परिचय

यह है फ्रेज़रगंज का किस्सा

यह है बंगाल की खाड़ी का एक हिस्सा।

पश्चिम में है बेनफिश जेट्टी बसा

तो बक्खाली है इसके पूर्व दिशा।

विपदाओं से रक्षा करने के लिये इसके

रडार स्टेशन के साथ भा.त.र. अव. फ्रेज़रगंज है जहाँ बसा।


नमक पानी का हवा खाकर भी तटरक्षक जवान रहते है मुस्तैद यहाँ

कमान अधिकारी भी सबके साथ कंधे से कंधा मिलाकर लेते है कामों में हिस्सा।

बात जब आयी पोस्टिंग " विनय" की

तो अपनी प्राथमिकता के साथ दिखाई यहाँ आने की जिजीविषा।



 **विनय कुमार, असैन्य स्टाफ अधिकारी**
भा.त.र.अव. फ्रेज़रगंज




पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रेरणादायक पहल

27 जनवरी 2025 को भारतीय तटरक्षक बल के फ्रेज़रगंज स्टेशन द्वारा तटरक्षक के 7.65 एकड़ भूमि पर एक विशेष वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत कुल 250 पौधे लगाए गए, जिसमें स्थानीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं और वन विभाग के सहयोग से सभी की सामूहिक भागीदारी रही। इस आयोजन का उद्देश्य केवल पौधे लगाना नहीं था, बल्कि पर्यावरण में स्थिरता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना भी था। छात्रों की सक्रिय भागीदारी ने इस कार्यक्रम को विशेष रूप से उत्साहवर्धक बना दिया। उनके साथ मिलकर तटरक्षक बल के अधिकारियों और कर्मियों ने भी उत्साहपूर्वक पौधा रोपण किया।

28 जनवरी 2025 को भारतीय तटरक्षक स्टेशन फ्रेज़रगंज के परिसर में "स्वच्छ तट, हरित तट" विषय पर एक विशेष चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से आए 60 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और अपनी रचनात्मकता के माध्यम से पर्यावरण संबंधी मुद्दों के प्रति जागरूकता का परिचय दिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा, स्वच्छता और हरियाली के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना था।

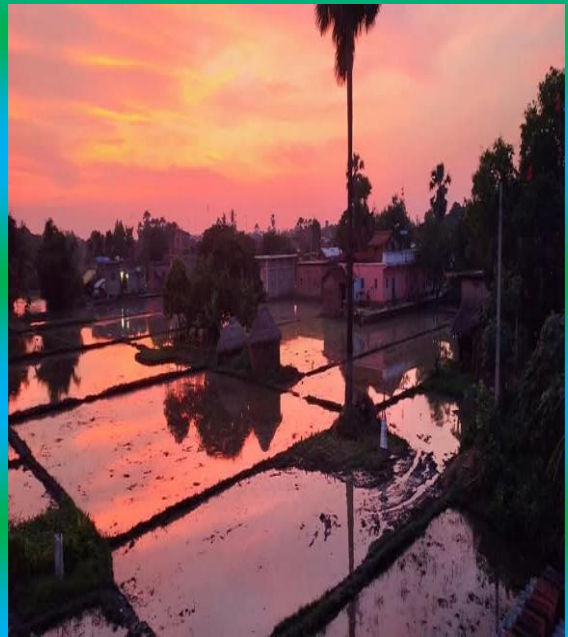
इन आयोजनों से यह स्पष्ट है कि भारतीय तटरक्षक बल सिर्फ समुद्री सीमाओं की रक्षा ही नहीं करता, बल्कि समाज और पर्यावरण की भलाई के लिए भी बराबर प्रयासरत है। "एक वृक्ष, एक जीवन" की भावना के साथ आयोजित यह कार्यक्रम निश्चित ही आने वाले वर्षों में एक हरा-भरा और स्वच्छ भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।



 कुन्दन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
भा.त.र.अ. फ्रेज़रगंज

मेरा गाँव


लड़के जीतने भी थे, मेरे गाँव में,
बैठते थे आम की छाव में,
बड़ी रौनक हुआ करती थी, घर में,
वो सब के सब चले गए शहर,
ऐसा नहीं की रहने को मकान नहीं है,
हास-परिहास का आमतौर पे, उपवास रहता है,
मेरा गाँव अब उदास रहता है।



बाबूजी ठंड में सिकुड़े और पसीने में नहाये हैं,
तब जाकर किसी तरह तीन कमरे बनवाए हैं,
अब तीनों कमरे खाली हैं, मैदान बेजान है,
छतें अकेली और गलियाँ वीरान हैं,
माँ का शरीर अब घुटनो पर भारी है,
अपने ही घर में माँ-बाप का उपवास रहता है,
छत से बतियाते पंखे, दीवारें और जाले हैं,
कुछ मकानों पे तो वर्षों से ताले हैं,
दीवाली की छुरछुरी चली गयी,
होली से गुलाल उड़ गया,
सावन के झूले उतर गए, भादों भी निराश रहता है,
मेरा गाँव अब उदास रहता है।

सारे गावों के खेल, वक्रत की तह में दब गए,
अब रामलीला, दुर्गा पूजा की वो बात नहीं रही,
गर्मियों में छतों पे हलचल वाली रात नहीं रही,
दलान में बैठे बुजुर्ग, स्वर्ग सिधार गए,
जो जीत गए मुश्किलों से, वो बीमारियों से हार गए,
ये अंधी दौड़, गाँव सुनाकर गयी,
जाने वाले चले गए, कहाँ कोई अनायास रहता है,
मेरा गाँव अब उदास रहता है।



 राजीव भूषण सिन्हा, उत्तम नाविक
भा.त.र.अव. फ्रेज़रगंज



राजस्थानी संस्कृति

राजस्थान की संस्कृति अनोखी और ऐतिहासिक अतीत के समान रंगीन है। राजस्थानी संस्कृति राज्य के रंगीन इतिहास को दर्शाती है। राजस्थान के लोकनृत्यों, पारंपरिक व्यंजनों, दिनचर्या में राजस्थानी संस्कृति की झलक दिखती है।

एक राजसी राज्य होने के नाते, राजस्थान अपने शाही भव्यता और रॉयल्टी के लिए जाना जाता है। यह अपनी सुंदर परंपराओं, संस्कृति, लोगों, इतिहास और स्मारकों के साथ दुनियाभर से पर्यटकों को आकर्षित करता है।

राजस्थानी लोगों की पोशाक :- राजस्थान के लोग रंगीन कपड़ों, पगड़ी और साड़ियाँ, जो पत्थरों और घुँघरुओं से सुशोभित होते हैं, पहनना पसंद करते हैं। पुरुष 'जोधपुरी सफा' या 'जयपुरी पगड़ी' के रूप में प्रसिद्ध पगड़ी पहनते हैं जो कि उनकी पोशाक का एक अभिन्न अंग है। अंगरखा, कपास से बने एक फ्रॉक के प्रकार का परिधान ऊपरी शरीर को कवर करता है और निम्न शरीर धोती या पजामा के साथ लपेटा जाता है। राजस्थानी महिलाएं आभूषण की शौकीन होती हैं और वे अपने कपड़े को चंकीचांदी और लाख के गहने के साथ पहनना पसंद करती हैं।

राजस्थान में कला और शिल्प :- अपनी उत्तम हस्तशिल्प वस्तुओं के साथ राजस्थान, आभूषण, रंगीन कपड़े, कढ़ाई वाले कपड़े और चमड़े के उत्पादों को खरीदने का असाधारण स्थान है। आप लघु चित्रों, हाथों से बुने हुए गलीचा और कठपुतलियों को खरीद सकते हैं जो कि यहां अक्सर पर्यटकों द्वारा खरीदे जाते हैं। लकड़ी के डमी के साथ कठपुतली शो राजस्थान में भी प्रदर्शित किए जाते हैं जो कई पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। चूंकि राज्य अपने राजस्थानी वस्त्र, टाई-डाई काम, कढ़ाई, ज़री, दर्पण का काम, धातु धागा कढ़ाई और हाथब्लॉक चित्रित कपड़े के लिए प्रसिद्ध है, यहां काफी लोकप्रिय हैं।

राजस्थानी संगीत :- राजस्थान के सुन्दर लोक संगीत कुछ ऐसे हैं कि वह एक बेजान से रेगिस्तान में भी जान डाल देते हैं। इन गीतों को अलग-अलग कहानी सुनाते हुए गाया जाता है। वे बहुत अच्छे और सम्मोहक हैं और आमतौर पर विशेष अवसरों और त्योहारों के दौरान गाये जाते हैं। राजस्थानी संगीत न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।



राहुल लमोरीया, नाविक (आर पी)

भा.त.र.पोत अमृतकौर



बेटी की बिदाई

वातावरण उदास हो गया,
मन अनमना खुशी का,
महके फूल किसी के घर में,
उजड़ा चमन किसी का।

सुख-दुख दोनों चौराहों पे,
भटकी हुई डगर है,
कदम रुके, परछाई पूछे,
ये कौन-सा नगर है?

आज कुएं पे पनिहारिन की,
गागर फूट गयी है,
दूर पिया का देश,
पिता की नगरी छूट गई है।

आज बिदा की बेला में,
क्यों रोती हो शहनाई,
क्यों, घर-बाहर संग साथ की,
आँखें भर-भर आई।

तुम तो कामना की पाखी,
अपने बाबा के घर आँगन की,
नीड़ त्याग के कभी न जाना,
तुम हो लक्ष्मी माता कुंज की।

सुख-दुख का मेल है दुनियाँ,
आना जाना लगा रहेगा,
दुख में हँसना, साहस रखना,
सुखों का सावन खिला रहेगा।



राजीव भूषण सिन्हा, उत्तम नाविक
भा.त.र.अव. फ्रेज़रगंज

सरहद पर फौजी

माँ भारती के लिए
मैं सारे कर्तव्य निभाऊँगा
देखना हिन्दुस्तान
तिरंगे में लिपट कर आऊँगा।
सरहद पर खेल खून की होली
संसार में रंग बिखेर जाऊँगा
बरसेगी गोली सीमा पर
दिपावली भारत मनाएगा
बनकर वीर देश की शान मैं बढ़ाऊँगा
चली जाए जान गर
मरते दम तक देश के काम आऊँगा।
माँ भारती के चरणों में
दुश्मन के शीश झुकाऊँगा
मातृभूमि तन मन से तेरी सेवा
मैं हर दिन शीश नवाऊँगा।
गर हो जाए शत्रु का वार
उसको औकात हम दिखाएंगे
जब तक होगी सांस
वीरता का परचम लहराएंगे।
आएंगे घर गर तो
लिपट कर तिरंगे में आएंगे
गर मिले जन्म दुबारा
बन फौजी सीमा पर जाएंगे।



✍ शिवाजी, नाविक
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर

वीर जवान

बुझा है जिस आँगन का चिराग,
उस घर की दीवारें भी रोयी होंगी ।
खोया है जिन माताओं ने लाल अपना,
न जाने वो माताएँ कैसे सोयी होंगी ?

कतरा-कतरा बहे खून का अब,
आखिर हिसाब देगा कौन ?
क्यों न भड़के मेरे सीने में भी आग ?
आखिर कब तक कोई रहेगा मौन ?

छलनी किया जिन दहशतगर्दों ने सीना,
अब उन्हें उनकी औकात दिखानी होगी,
भूलना नहीं कर्ज देश के जवानों का,
बात ये उनके घर में घुस कर सिखानी होगी।



कृष्ण गोपाल, नाविक (ए एल)
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर



लिखना : आत्म-अभिव्यक्ति और विचारों की स्पष्टता

यदि आप जीवित हैं, तो लिखें। मेरा यह आग्रह किसी विशिष्ट विषय या विद्या तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। आप जो भी कहना चाहते हैं, चाहे वह किसी भी विषय से संबंधित हो, उसे लिखें। लिखने से न केवल आपके विचार स्पष्ट होते हैं, बल्कि आपकी सोच में यदि कोई भ्रम या त्रुटि हो, तो वह भी स्वतः छन जाती है।

जब आप लिखते हैं, तो आपके विचार अधिक ठोस और सुव्यवस्थित हो जाते हैं। आपको यह सोचकर रुकना नहीं चाहिए कि पाठक आपके लेखन को किस दृष्टि से देखेंगे या वे आपके बारे में क्या धारणा बनाएंगे। समय और परिस्थितियों के अनुरूप आपके विचार भले ही सभी को अनुकूल न लगें, फिर भी आपको वही लिखना चाहिए जो आपका हृदय और मस्तिष्क कहने को प्रेरित करता है। कम से कम, आपको यह संतुष्टि अवश्य होगी कि आपने अपने विचारों को बिना किसी दबाव के व्यक्त किया है।

जो व्यक्ति लिखता नहीं है, उसके विचार, अनुभव और सोच स्वयं के लिए भी अस्पष्ट रह जाते हैं। समय के साथ उनमें कई बदलाव आते रहते हैं, जो अंततः उसके व्यक्तित्व को अस्थिर और संदेहास्पद बना सकते हैं। ऐसा व्यक्ति बाहरी घटनाओं और परिस्थितियों से अत्यधिक प्रभावित होता है और बार-बार अपने विचारों को बदलता रहता है।

अपने जीवन के अनुभवों को लिखें, कहानियाँ लिखें, कविता लिखें, विचारों को अभिव्यक्त करें या फिर अपनी दिनचर्या की डायरी ही लिखें। कहना जितना आवश्यक है, लिखना उतना ही महत्वपूर्ण है। यदि आप लेखन के अभ्यस्त नहीं हैं, तो भी इसे अपनाएँ, क्योंकि समाज या समय आपके विचारों को व्यक्त करने से आपको रोक नहीं सकता।


लेखन कथनी और करनी के अंतर को भी उजागर करता है। जो आप कहते हैं, उसे लिखें, और जो आप लिखते हैं, उसी के अनुरूप आचरण करने का प्रयास करें। यह सच है कि लोग आपकी लेखनी से वही अर्थ निकालेंगे, जो उनकी मानसिकता, विचारधारा और दृष्टिकोण के अनुरूप होगा। जैसा कि रामचरितमानस में कहा गया है —

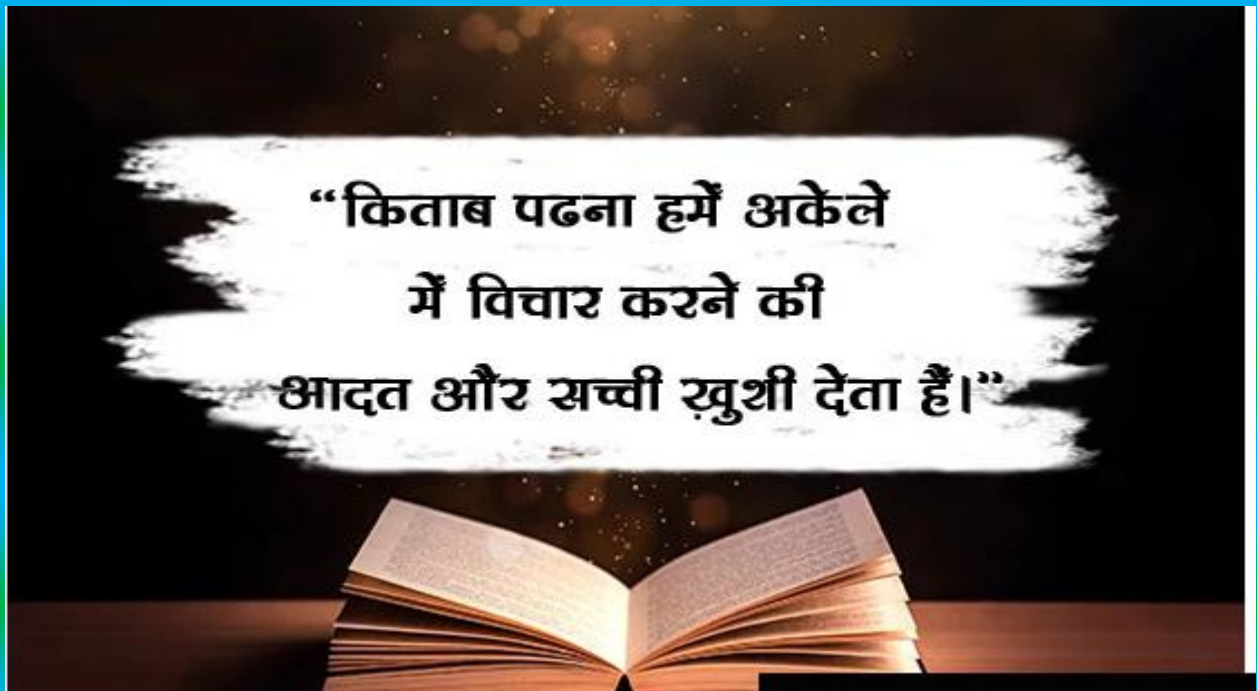
"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

अर्थात्, प्रत्येक व्यक्ति अपनी भावना और दृष्टिकोण के अनुसार ही किसी भी विषय को समझता है। इसलिए लेखक को सदैव आत्मसंतुष्टि को प्राथमिकता देते हुए लिखना चाहिए, न कि पाठकों की संतुष्टि को ध्यान में रखकर।

लेखन केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आत्मविश्लेषण, चिंतन और सृजनशीलता का साधन भी है। यह व्यक्ति को स्वयं की पहचान से जोड़ता है और उसे एक सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अतः यदि आप जीवित हैं, तो अवश्य लिखें—न केवल दूसरों के लिए, बल्कि अपने लिए भी।



 गुड्डू कुमार शर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय – 8, हल्दिया



मन

विचार करना तो मन का काम है
क्या इस मन पर कोई लगाम है
निरंतर यह बुन रहा है धागे
कभी पूरब कभी पश्चिम ये भागे

विचार की यह धारा निकलती है अन्तः मन से
विचारों के सागर में गोते यह खाती है
कोई न जाने, यह कितना गहरा है,
इस पर सिर्फ हृदय का पहरा है
चाहता शांति, न चाहता अवसाद
इसको न मिलता, मुक्ति का स्वाद

हर पल यह खेल, मन का फेर है,
हर ख्याल तो, मिथ्या का ढेर है
जगत में वितरना, मन को, संभाल
इसको रोकता है अन्तर्मन की ढाल



 कविता सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय -8, हल्दिया

POSDCORB सिद्धांत और व्यक्तिगत जीवन में इसकी उपयोगिता

लोक प्रशासन में स्नाकोत्तर डिग्री करते समय 1937 में लूथर गुलिक और एल उरविक द्वारा प्रतिपादित प्रशासनिक सिद्धांत POSDCORB के विषय में मुझे पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह लोक प्रशासन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो प्रशासनिक कार्यों के विभिन्न चरणों को परिभाषित करता है। लेकिन यह मेरा मानना है कि POSDCORB सिद्धान्त हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी उतना ही प्रभावी सिद्ध हो सकता है जितना की लोक प्रशासन में। POSDCORB के घटकों की मानव जीवन में भूमिका निम्न बिन्दुओं के आधार पर देखी जा सकती है।

P – योजना (Planning), जैसा कि किसी संगठन को लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए योजनाबद्ध कार्य करने की आवश्यकता होती है, वैसे ही हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना आवश्यक है। यदि हम अपने भविष्य की स्पष्ट योजना बनाते हैं, तो सफलता प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है।

O – संगठन (Organizing), एक सफल जीवन के लिए हमें अपने संसाधनों, समय और ऊर्जा को सही तरीके से व्यवस्थित करना पड़ता है। जैसे एक संस्था अपने कर्मचारियों और संसाधनों का प्रबंधन करती है, वैसे ही प्रत्येक मनुष्य को भी अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और कार्यालयी उत्तरदायित्वों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना चाहिए।

S – स्टाफिंग (Staffing), स्टाफिंग का संबंध सही व्यक्ति को सही कार्य सौंपने से है। हमारे जीवन में भी यह महत्वपूर्ण है कि हमें अपने कार्यों को परिवार अथवा कार्यालय के दूसरे व्यक्तियों के साथ साझा करना चाहिए, जिससे सामूहिक प्रयासों के माध्यम से बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

D – निर्देशन (Directing) एक नेता की तरह, हमें अपने जीवन के हर निर्णय को प्रभावी रूप से निर्देशित करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। चाहे वह व्यक्तिगत हो या पेशेवर जीवन, सही दिशा में बढ़ने के लिए स्पष्ट निर्देशों की आवश्यकता होती है।


Co – समन्वय (Coordinating), जैसे किसी संगठन में समन्वय आवश्यक होता है, वैसे ही हमारे जीवन में भी परिवार, समाज और कार्यस्थल के बीच तालमेल बनाए रखना बहुत जरूरी है। सही समन्वय से संघर्ष कम होता है और सामूहिक सफलता की संभावना बढ़ती है।

R – रिपोर्टिंग (Reporting), रिपोर्टिंग का तात्पर्य नियमित समीक्षा और आत्मविश्लेषण से है। हमें अपने लक्ष्यों की प्रगति का मूल्यांकन करते रहना चाहिए और यह देखना चाहिए कि हम सही दिशा में जा रहे हैं या नहीं।

B – बजटिंग (Budgeting) जैसे किसी संगठन को वित्तीय प्रबंधन की आवश्यकता होती है, वैसे ही हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी बजट बनाना और आर्थिक प्रबंधन करना आवश्यक है। यदि हम अपने संसाधनों का सही उपयोग करेंगे, तो आर्थिक स्थिरता बनाए रख सकते हैं।

POSDCORB न केवल प्रशासनिक प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायक है, बल्कि यह व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावी रूप से प्रबंधित करने में मदद करता है। यदि हम इन सिद्धांतों को अपनाते हैं, तो हमारा जीवन अधिक संगठित, संतुलित और सफल हो सकता है। इसलिए, चाहे हम एक छात्र हों, पेशेवर हों या गृहस्थ जीवन जी रहे हों, POSDCORB के सिद्धांतों का पालन करके हम अपने जीवन को सुगठित और उद्देश्यपूर्ण बना सकते हैं।



 गुड्डू कुमार शर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय -8, हल्दिया

"पुस्तकें ज्ञान का भंडार हैं, जो हमें जीवन जीने का तरीका सिखाती हैं।" - महात्मा गांधी



यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है

मुझे अपने पिता की तरह यूनिफार्म पहनने की आस है।
यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है।
सारे दोस्तों के साथ जिंदगी समंदर में बिताने की प्यास है
यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है।
साहिल और किनारों के बीच
इन प्यारे और नयी राहों के बीच
मुझे अपने जुनून की तलाश है
यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है।
उमंग है देखने की डॉलफिन को
नए सितारे, नए किनारे को
लहरों से पंगे लेने का अपना ही अलग मिसाज है,
यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है।
सी सिकनेस के साथ काम करना
न लहरों, न तूफानों से डरना,
यूनिफार्म में जिंदगी कितनी खास है।



शैलेन्द्र कुमार, प्रधान अधिकारी
भारतीय तटरक्षक वायु सामान भंडार भुवनेश्वर



आत्मनिर्भर भारत पर निबंध

आत्मनिर्भर का अर्थ है :- अपनी क्षमताओं और अपने प्रयत्नों पर आश्रित रहकर कार्य करना। यह गुण आने से व्यक्ति को दूसरों के सहारे की आवश्यकता नहीं रहती।

आत्मनिर्भर के लिए जड़, इच्छा शक्ति और कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। आत्मनिर्भरता का पाठ किसी विद्यालय में नहीं पढ़ाया जाता और न ही किसी उपदेश से आता है। जीवन की आवश्यकताएँ आत्मनिर्भरता की भावना को धीरे-धीरे विकसित करती हैं।

आत्मनिर्भरता मनुष्य को यथार्थवादी और आशावादी बनाता है। वह प्रत्येक को अपनी कोशिशों से प्राप्त कर सफलता का सुखद अनुभव करता है। अपनी सफलताओं से शिक्षा लेकर पुनः सफलताओं के लिए नए-नए मार्ग खोजता है। आत्मनिर्भर व्यक्ति धरती पर रहकर आकाश में उड़ने की चेष्टा करता है। आत्मनिर्भरता का अर्थ यह भी है कि अपने ऊपर विश्वास रखना। भाग्य के सहारे न बैठकर अपनी क्षमताओं का विकास करना। कहावत है कि बिना परिश्रम के शेर को भी अपना शिकार नहीं मिलता। कहा भी गया है :-

“उधमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। नहीं सुप्तस्य सिंहस्य मुखे प्रविशन्ति मृगाः”

अर्थात् परिश्रम से ही सभी कार्य पूर्ण होते हैं मन की इच्छाओं से नहीं, क्योंकि सोये हुए शेर के मुँह में हिरण (शिकार) अपने आप नहीं चला जाता अर्थात् उसे शिकार प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। विश्व में जितने भी महापुरुष हुए, वे सभी आत्मनिर्भर थे और दूसरों के प्रेरणा स्रोत बने।

अब्राहम लिंकन झोपड़ी से निकलकर अमेरिका के राष्ट्रपति बने, नेपोलियन एक निर्धन परिवार में पैदा हुए, जिन्होंने फ्रांस पर ही नहीं आधे विश्व पर राज किया, एकलव्य अपने प्रयास से धनुर्विद्या का पंडित बना, ईश्वरचंद विधासागर निर्धन व्यक्ति से बंगाल के महान शिक्षा शास्त्री बन गए, लाल बहादुर शास्त्री निर्धनता की नदी पार कर भारत के प्रधानमंत्री बन गए।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि “GOD HELPS THOSE WHO HELP THEMSELVES” अर्थात् जो व्यक्ति अपनी सहायता अपने आप करता है, ईश्वर भी उसकी सहायता करते हैं।

ऐसा पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन में कभी भी और कहीं पर भी असफल नहीं होता। वह अपने जीवन में आने वाले हर अवसर को पकड़ लेता है, और यदि यह अवसर उसके जीवन में नहीं आते तो वह उन्हें पैदा करता है।

आत्मनिर्भर व्यक्ति को अपने प्रत्येक कार्य में गहरी आस्था होती है, क्योंकि उसका प्रत्येक कार्य उसके प्रयत्नों पर आश्रित होता है। लक्ष्य प्राप्ति की भावना रूकावटों को दूर कर देती है। वह शीघ्र निर्णय लेने में भी सक्षम होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत के दिल में आत्मनिर्भरता का सपना पलने लगा था। गांधीजी हमेशा कहते थे कि पूर्ण रूप से स्वदेशी वस्तुओं को अपनाओ। अपने देश के प्राकृतिक संसाधनों व कच्चे माल से तैयार होने वाली वस्तुओं का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करो। वे खुद भी पूर्ण स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते थे। यह आत्मनिर्भर भारत की तरफ उठाया गया पहला कदम था।

लेकिन दुख की बात यह रही कि आजादी के 70 साल तक यह पहला कदम दूसरे कदम में नहीं बदल पाया। मगर कोरोना महामारी से उपजे संकट में देश ने खाद्यानों व अन्य जरूरी सामानों की कमी के बाद आत्मनिर्भरता का मतलब समझा। इसके बाद से ही भारत के दिल में आत्मनिर्भरता का सपना पलने लगा।

आत्मनिर्भर बनने के पांच स्तम्भ

अर्थव्यवस्था – हमारे देश में क्षेत्रों के अनुसार अलग-अलग अर्थव्यवस्था है, देश के सभी नागरिकों को रोजगार मिले और स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण हो तो ये कार्य अर्थव्यवस्था की सहायता से किया जा सकता है।

तकनीकी – भारत पिछले कई दशकों से तकनीकी में काफी विकसित हुआ है पर हमें तकनीक का सहारा लेकर ऐसे संसाधनों को बनाने की जरूरत है, जिससे किसी भी वस्तु का निर्माण किया जा सके।

इन्फ्रास्ट्रक्चर – आज हमारे देश की सबसे बड़ी मजबूती इन्फ्रास्ट्रक्चर है, जो देश की आत्मनिर्भरता बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है।

मांग – हमारे देश में कच्चे माल की मांग लगातार बढ़ती जा रही है, कच्चे माल के बिना वस्तुओं का निर्माण संभव नहीं है। इसी कारण कच्चे माल का उत्पादन जरूरी है।

बढ़ती जनसंख्या – भारत की जनसंख्या लगातार तेजी से बढ़ती जा रही है, जो देश के आर्थिक विकास में बाधा बन रही है पर भारतीय बेरोजगारों द्वारा कच्चे माल और वस्तुओं का निर्माण शुरू करवाया जाए तो यही जनसंख्या देश के विकास का कारण भी बन सकती है।

आत्मनिर्भरता का मतलब खुद के पैरो पर खुद के बल से खड़ा होना और ऐसा करने वाला देश विकसित देश होता है, हर वस्तु का निर्माण हमारे देश में हो।

इस पर हमारी भारतीय सरकार अनेक प्रयास कर रही है। हमें उम्मीद है कि आने वाले कुछ ही सालों में हमारा देश आत्मनिर्भर बन जायेगा तथा हमारा देश विकसित देशों में श्रेष्ठ देश होगा। उदाहरण से हम समझे तो कोई किसी व्यक्ति का जीवन एक लाठी से चल रहा है, परन्तु उससे वह लाठी छीन ली जाये तो उसकी क्या हालत होगी ? क्या वह अपना जीवन व्यतीत कर पायेगा? वह तो दूसरों पर निर्भर रहता है, इसी प्रकार दूसरे देशों पर निर्भर रहने वाले देशों के साथ होता है। जब चाहे दाम बढ़ा दिए जाते हैं, पर जरूरत के मारे उस देश को वह वस्तु जिस भी दाम में दी जाती है, उसे खरीदना पड़ता है। उसकी वह मजबूरी होती है। और आत्मनिर्भर देश इसका फायदा उठाते हैं।



रंजीत चौधरी, भंडारपाल-1

भारतीय तटरक्षक वायु सामान भंडार भुवनेश्वर



स्वच्छ समुद्र तटों की ओर एक सशक्त कदम

21 सितम्बर 2024 को भारतीय तटरक्षक स्टेशन फ्रेजरगंज द्वारा बक्खाली समुद्र तट पर अंतर्राष्ट्रीय तटीय सफाई दिवस का सफल आयोजन किया गया। यह दिवस प्रतिवर्ष सितंबर महीने के तीसरे शनिवार को पूरी दुनिया में मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य समुद्री संरक्षण और कचरा प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। इस अभियान में 270 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें विभिन्न विद्यालयों के छात्र, NCC कैडेट्स, गैर-सरकारी संस्थाएं (NGOs), मछुआरा संघ, तथा स्थानीय बैंक (SBI और PNB) के प्रतिनिधि शामिल थे। सभी ने मिलकर तट की सफाई में उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया और स्वच्छता के महत्व को जन-जन तक पहुँचाया। इस अभियान के दौरान लगभग 190 किलोग्राम समुद्री और प्लास्टिक कचरा एकत्र किया गया, जिसे पंचायत समिति की सहायता से उचित रूप से निपटाया गया। तटीय क्षेत्र के विभिन्न प्रमुख स्थानों पर बैनरों और पोस्टरों के माध्यम से पर्यावरणीय जिम्मेदारी और जन-जागरूकता को भी प्रोत्साहित किया गया। यह पहल न केवल तटीय क्षेत्रों को साफ रखने की दिशा में एक प्रेरक कदम रही, बल्कि यह कार्यक्रम "स्वच्छता ही सेवा" अभियान का भी हिस्सा था, जिसके अंतर्गत तटीय सफाई को एक सतत अभियान के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है। भा.त.र.अव. फ्रेजरगंज का यह प्रयास एक उदाहरण है कि संगठित प्रयास, जन-सहभागिता और समर्पण से हम अपने समुद्र तटों को स्वच्छ, सुंदर और सुरक्षित बना सकते हैं। यह आयोजन, भविष्य के लिए हरित और स्वच्छ तटों की नींव रखता है, जिसमें सभी का सहयोग आवश्यक है।



कुन्दन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
भा.त.र.अव. फ्रेजरगंज




यादों की चादर

यादों की चादर लपेटे जब दो मित्र मिलें
लगे पुराने लम्हों को फिर से जीने
पर ना जाने क्यूँ उस वर्तमान में
लग रही थी सारी की सारी नई
मानो जैसे हमने इन सारे लम्हों को आज की सुबह ही जिया हो
हर एक लम्हे में वही पुरानी बादल की खुशबू

और वे उसी बादल की खुशबू का आनंद ले कर
खिलखिला कर हंस पड़ते,
भले ही उन यादों में हों दोनों के तकरार की कहानी
या फिर किसी सुंदरी की कल्पना,
या किसी गंभीर सामाजिक मुद्दों पर चर्चा
वे बस खिलखिला कर उस लम्हे को जीने लगें,
भूल गये वो भूत-भविष्य, सिर्फ उस पल को जीने लगे

तब जा कर उस पल उन्हें ये समझ आया
कि यादों की चादर कभी गर्मी महसूस नहीं करवाती
ये सिर्फ उन यादों के बादल से ठंडक चुरा कर
हमारे जीवन में एक खुशनुमा पल छोड़ जाती हैं
जिसे हम जब चाहें, जहाँ चाहें, जिसके साथ चाहें
साझा कर के अपने जीवन में उस ठंडक को वापस ला सकते हैं।



 सौरभ कुमार गुप्ता, चार्जमैन
वायु उपादान मरम्मत इकाई (हल्दिया)

जीवन – एक कहानी, जिसे सहेजना जरूरी है

जीवन कहानी के समान है। इस कहानी को इकट्ठा करते रहना चाहिए। जब आप आयु के अंतिम पायदान पर पहुँचेंगे तो आपको अपने से कम उम्र वालों के साथ अपने अनुभव साझा करने का अवसर प्राप्त होगा। आपको शिक्षाप्रद दृष्टिकोण से अपनी कहानियों को साझा करने की आवश्यकता होगी। ऐसा करते हुए मैंने अनेकों लोगों को देखा है और उन कहानियों से मेरे व्यक्तिगत जीवन में बहुत लाभ हुआ है।

यह कहानी आपको कई अनुभव प्रदान करेगी। अनुभव हर समय और हर जगह मिलता है। हमारी नितदिन की प्रक्रिया में मिलता है। यदि किसी बात की आवश्यकता है, तो यह है कि हमें इसे ईमानदारी के साथ इकट्ठा करना होगा और जितना इसे इकट्ठा करने की आवश्यकता है, उतना ही उसे संभालकर रखने की आवश्यकता है। मेरे पिताजी इतने पढ़े-लिखे तो नहीं थे, लेकिन जब वे अपने अनुभव साझा करते थे, तो लगता था कि कोई विद्वान या दार्शनिक जीवन की उलझी सभी गांठों को आसानी से खोलना सिखा रहा है।

कई बार हमारे आस-पास होने वाली घटनाओं को हम अनदेखा कर देते हैं, लेकिन यह घटनाएँ हमारे लिए कुछ संदेश और शिक्षा प्रदान करती हैं। हमें इसका अध्ययन करने की आवश्यकता है। जब आप किसी घटना पर अपनी पैनी नजर रखते हैं, तो वह आपको उसके मूल कारण और निवारण का रास्ता दिखाती है, और फिर आप आसानी से उससे बचकर निकल सकते हैं। इसके पश्चात जो आपको प्राप्त होगा, वह आपके द्वारा अर्जित किया हुआ अनुभव है, जिसे आप दूसरों तथा अपने परिवारजनों के हितोपदेश के समय खर्च कर सकते हैं।

कई अवसरों पर आपको लगता होगा कि आपके साथ बहुत बड़ा अन्याय और दुर्व्यवहार हुआ है, लेकिन उन परिस्थितियों में अर्जित अनुभव आपके लिए हीरे के समान है। आप अपने इस अनुभव से पूरे समाज का कल्याण कर सकते हैं और जब इस अनुभव को कहानी के रूप में किसी के सामने प्रस्तुत करेंगे, तो वह साझापन आपको उसका परम मित्र, साथी और अच्छा हितैषी बना देगा। वह इस अनुभव और ज्ञान के प्रकाश से अपने जीवन को खुशनुमा बना लेगा।


मेरा आपसे विनम्र आग्रह है कि आप अपने अनुभवों को, अपने जीवन में घटित घटनाओं को एकत्रित करें और उन्हें कहानी का रूप दें। यह कहानी काल्पनिक नहीं, बल्कि सच्चे अनुभव पर आधारित होगी और लोग इसे सहजता से स्वीकार करेंगे।

"जीवन के अनुभव को सींचता जा,
सुनता जा और सीखता जा,
न जाने तुझे भी कब महाकाव्य लिखने की जरूरत पड़ जाए!"



गुड्डू कुमार शर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय -8, हल्दिया

गुल्लक से चंद अल्फाज़

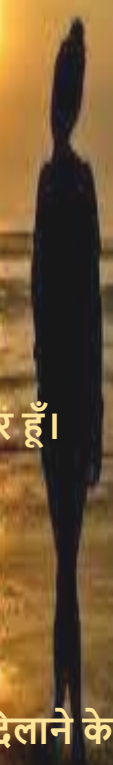


तुम्हारी प्रशंसा
तुम्हारा गुस्सा
तुम्हारी अवहेलना
सभी को मैंने सहर्ष स्वीकार किया
इन्हीं सब ने तो
मुझमें मुझको
पुष्पित पल्लवित कर
मुझे परिभाषित किया।

खामोशी एक जवाब है
तो कभी एक सवाल है
कभी किसी का इकरारनामा
तो कभी क्रोध-ज्वाला का अंगार है।

खामोशी, कभी किसी का किसी के लिए समर्थन,
तो कभी विद्रोह का आगाज़ है।

कभी सबकुछ व्यवस्थित होने का विश्वास,
तो कभी अव्यवस्था का प्रमाण है।




एक अहसास हूँ
एक आस हूँ,
शिथिल होते मन में,
स्फूर्ति का संचार हूँ मैं।

एक ख्वाब हूँ,
एक आईना हूँ
पथ-भ्रष्ट होते मन में,
उम्मीद का फिर से संचार हूँ।

एक ज़रिया हूँ
एक पैगाम हूँ,
तुम पर तुमको विश्वास दिलाने के लिए
तुममें ही प्रस्फुटित विश्वास का आगाज़
हूँ मैं।



 एकता गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की गतिविधियाँ

हिंदी पखवाड़ा समारोह

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) में दिनांक 14 सितंबर 24 से 30 सितंबर 24 तक कोलकाता स्थित सभी इकाइयों के साथ संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसके दौरान कई कार्यक्रमों/ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया ।



17 सितंबर 24 से 30 सितंबर 24 तक तटरक्षक जिला मुख्यालय-7, पारादीप में हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान निबंध लेखन, हिंदी भाषण, हिंदी कविता लेखन जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं एवं विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया ।



तटरक्षक जिला मुख्यालय-8, हल्दिया में दिनांक 14 सितंबर 24 से 30 सितंबर 24 तक हल्दिया स्थित सभी इकाइयों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसके दौरान कई कार्यक्रमों/ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया ।



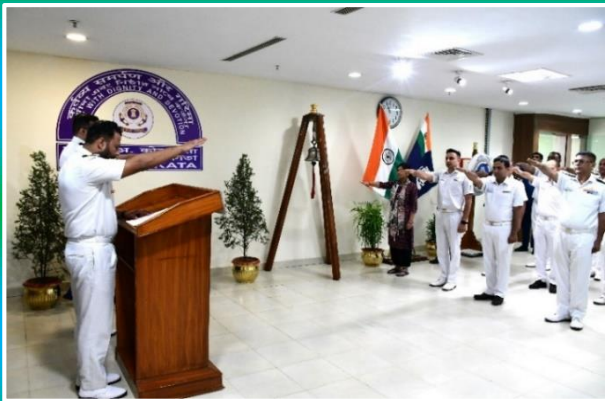
तनाव का उन्मूलन और आंतरिक शक्ति को बढ़ावा

तनाव उन्मूलन और आंतरिक शक्ति बढ़ाने पर एक अल्पकालिक कार्यक्रम 06-07 सितंबर 24 को भारतीय तटरक्षक अवस्थान, कोलकाता परिसर में आयोजित किया गया था। तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ. पू.), तटरक्षक जिला मुख्यालय -7, तटरक्षक वायु परिक्षेत्र (भुवनेश्वर), तटरक्षक सप्लाई डिपो (पारादीप), तटरक्षक वायु सामाग्री भंडार (भुवनेश्वर), तटरक्षक वैमानिकी निरीक्षण सेवा (भुवनेश्वर), तटरक्षक मरम्मत एवं निर्माण समूह (पारादीप), तटरक्षक वायु परिक्षेत्र (कोलकाता), भारतीय तटरक्षक अवस्थान (कोलकाता), तटरक्षक मरम्मत एवं निर्माण समूह (कोलकाता), तटरक्षक के भूतपूर्व कार्मिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।



स्वच्छता ही सेवा अभियान

17 सितंबर 24 से 01 अक्टूबर 24 तक के अंतर्गत भारतीय तटरक्षक अवस्थान, कोलकाता द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया गया। इसकी शुरुआत 17 सितंबर 24 को ली गई शपथ से की गई। इसके अंतर्गत वृक्षारोपण, एकल उपयोग प्लास्टिक से बचने के लिए पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता किया गया एवं विद्यालय में जागरूकता व्याख्यान आयोजित किया गया।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2024

भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता एवं नैतिक मूल्यों के प्रसार के लिए तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) में 28 अक्टूबर 24 से 03 नवंबर 24 सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2024 मनाया गया, जिसका थीम "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" था।



भारतीय तटरक्षक बल का अत्याधुनिक जहाज सहायता संस्थान की स्थापना

06 दिसंबर 2024 को ओडिशा के पारादीप में एक नए और अत्याधुनिक जहाज सहायता संस्थान की स्थापना भारतीय तटरक्षक बल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस संस्थान में तटरक्षक सामग्री भंडार, जहाज मरम्मत दल और जहाज सहायता संचालन की सुविधाएं शामिल हैं। इसका उद्घाटन कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा किया गया। यह केंद्र तटरक्षक बल की कार्यक्षमता और आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। यह जहाजों के लिए मरम्मत, रिफिट और दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने में अहम भूमिका निभाएगा। उद्घाटन समारोह में तटरक्षक बल के क्षेत्रीय कमांडर ने पारादीप के सामुद्रिक महत्व को रेखांकित किया और इसे एक प्रमुख समुद्री केंद्र के रूप में पहचान दी। यह जहाज सहायता संस्थान भारतीय तटरक्षक बल की दक्षता सुनिश्चित करने के साथ-साथ उत्तर-पूर्व समुद्री तट पर समुद्री सुरक्षा और संरक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।



भारतीय क्षेत्र में मछली पकड़ रहे दो बांग्लादेशी जहाज जब्त

भारतीय तटरक्षक बल ने अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा के पास भारतीय जल क्षेत्र में अवैध रूप से आई दो बांग्लादेशी जहाजों, 'एफवी लैला-2' और 'एफवी मेघना' को पकड़ा। इन जहाजों से कुल 78 सदस्यों को हिरासत में लिया गया और उनके द्वारा पकड़ी गई लगभग 160 टन मछलियाँ जब्त कर ली गईं। इस अभियान का नेतृत्व भारतीय तटरक्षक पोत अमोघ ने किया। दोनों बांग्लादेशी जहाज अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कानूनों व द्विपक्षीय समझौतों का उल्लंघन करते हुए भारतीय जल क्षेत्र में अनधिकृत रूप से मछली पकड़ रहे थे। हिरासत में लिए गए चालक दल के कुल 78 सदस्यों में 41 एफवी लैला और 37 एफवी मेघना पर सवार थे। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने जहाज पर लगभग 160 टन मछलियाँ जब्त कीं। दोनों जहाजों से पकड़े गए मछुआरों पर भारतीय समुद्री क्षेत्र अधिनियम, 1981 के तहत मामला दर्ज किया गया है।



नारकोटिक्स ब्यूरो एवं ड्रग कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए विशेष प्रशिक्षण

तटरक्षक जिला मुख्यालय-7, पारादीप द्वारा 20-22 जनवरी 25 तक समुद्र में मादक पदार्थ की तस्करी रोकने के लिए समुद्री अवरोधन पर नारकोटिक्स ब्यूरो एवं ड्रग कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सुरक्षा, अवरोधन रणनीति, कानूनी ढांचे और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए समन्वय पर केन्द्रित था।



सेवा निवृत्त होने वाले कार्मिकों का कमांडर के साथ वार्तालाप

31 जनवरी 25 से 31 जुलाई 25 के मध्य सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले कर्मियों के लिए 26 दिसंबर 24 को कमांडर तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के साथ परस्पर वार्तालाप कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) के अंतर्गत विभिन्न इकाइयों के लगभग 30 कर्मियों एवं उनके परिवारों ने भाग लिया।



मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच

तटरक्षक दिवस उत्सव सप्ताह 2024 के दौरान 06 जनवरी 25 को तटरक्षक निवास क्षेत्र मानिकतला फुटबॉल ग्राउंड में कोलकाता स्थित तटरक्षक इकाइयों के बीच एक मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया।



रन फॉर फ़न एवं साइकल रैली

तटरक्षक दिवस उत्सव सप्ताह के दौरान 19 जनवरी 25 को तटरक्षक अवस्थान कोलकाता द्वारा "इको पार्क" कोलकाता में **रन फॉर फ़न एवं साइकल रैली** का आयोजन किया गया।



चिकित्सा शिविर एवं चिकित्सा व्याख्यान

29 जनवरी 25 को तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.), कोलकाता परिसर में असैन्य अधिकारियों/कार्मिकों एवं कॉन्ट्रैक्चुअल कर्मचारियों और उनके परिवारों के लिए चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया।



31 जनवरी 25 को केंद्रीय विद्यालय नंबर 1, कोलकाता में बेसिक लाइफ सपोर्ट (सीपीआर) पर एक चिकित्सा व्याख्यान का आयोजित किया गया।



सैनिक मिलन समारोह

कोलकाता स्थित तटरक्षक में सेवारत, सेवानिवृत्त सैन्य और असैन्य कर्मियों तथा उनके परिवारों के लिए 08 फरवरी 25 को तटरक्षक आवासीय परिक्षेत्र, मानिकतल्ला में सैन्य मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, तटरक्षक पदक, कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) हैं। इस कार्यक्रम के दौरान वित्त वर्ष 2023-24 हेतु राजभाषा 'हिंदी' के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले अधीनस्थ यूनिट, पोत एवं अनुभाग को पुरस्कृत किया गया।



माननीय रक्षा राज्य मंत्री जी का भारतीय तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) का दौरा

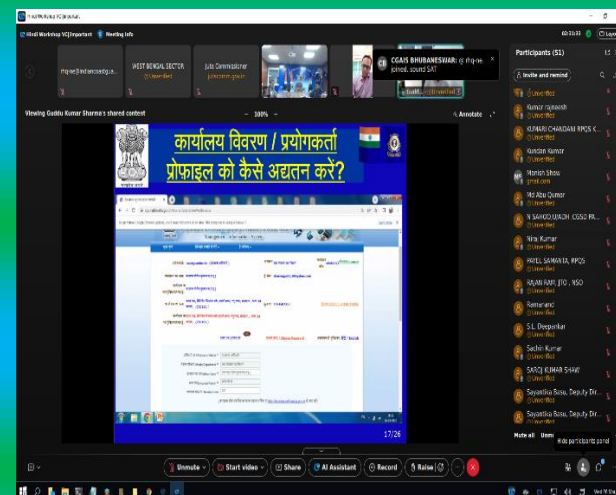
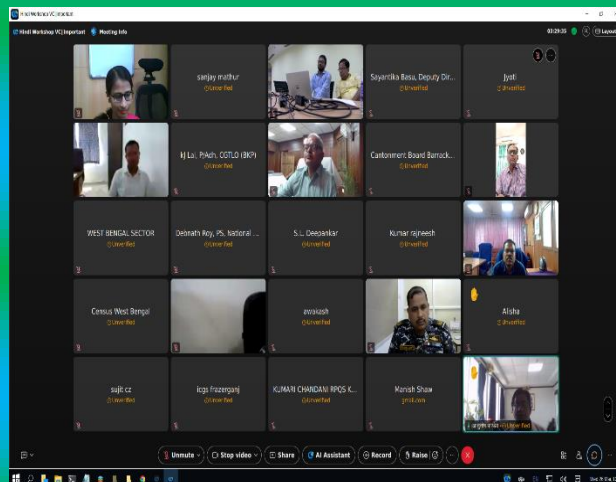
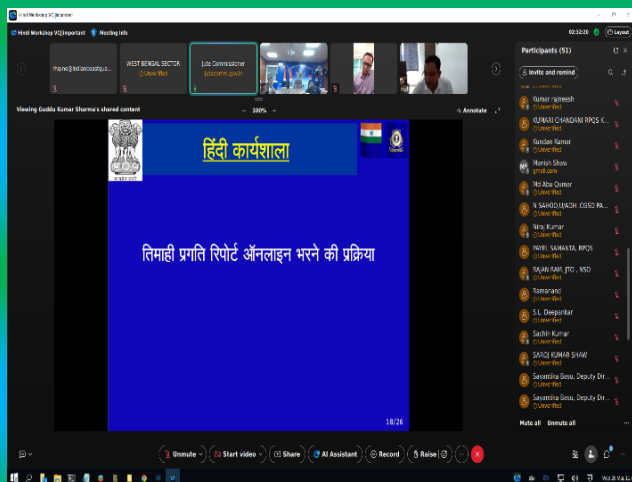
माननीय रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ द्वारा 02 मार्च 25 को कोलकाता स्थित भारतीय तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) का दौरा किया गया। माननीय मंत्री जी के कोलकाता स्थित भारतीय तटरक्षक मुख्यालय (उ.पू.) के प्रथम दौरे में क्षेत्र की ऑपरेशन और इन्फ्रास्ट्रक्चर योजनाओं की समीक्षा शामिल थी।

तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर-पूर्व) के कमांडर महोदय ने माननीय रक्षा राज्य मंत्री जी को तटरक्षक चार्टर के तहत क्षेत्र की ऑपरेशन और इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के बारे में जानकारी दी। माननीय मंत्री जी को पिछले वर्ष की परिचालन गतिविधियों और उत्तर-पूर्व क्षेत्र के जिम्मेदारी वाले क्षेत्र (एओआर) में उभरते सुरक्षा परिदृश्य के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए, इस कार्यालय द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी दी गई।



ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला – 26 मार्च 25

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोलकाता (कार्यालय-4) के तत्वाधान में तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों एवं पोतों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए “तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन कैसे भरें” विषय पर दिनांक 26 मार्च 25 को ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।



फोर्ट विलियम में हेरिटेज वॉक

भारत के ऐतिहासिक गौरव के प्रति जागरूकता और सामूहिक भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 26 मार्च 25 से 02 अप्रैल 25 तक विजय दुर्ग (पूर्ववर्ती फोर्ट विलियम) में हेरिटेज वॉक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) और तटरक्षक अवस्थान कोलकाता के 100 अधिकारियों और कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



ओडिशा तट पर 6.98 लाख से अधिक ओलिव रिडले कछुओं की रक्षा की गई

समुद्री संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय तटरक्षक बल के वार्षिक मिशन 'ऑपरेशन ओलिविया' ने फरवरी 2025 के दौरान ओडिशा में रुशिकुल्या नदी के मुहाने पर 6.98 लाख से अधिक ओलिव रिडले कछुओं के घोंसलों की रक्षा करने में मदद की। नवंबर से मई तक सालाना आयोजित किया जाने वाला ऑपरेशन ओलिविया भारतीय तटरक्षक की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से गहिरमाता समुद्रतट और ओडिशा के आस-पास के तटीय क्षेत्रों में ओलिव रिडले कछुओं के लिए सुरक्षित घोंसलों के मैदान सुनिश्चित करना है, जहाँ हर साल आठ लाख से अधिक कछुए आते हैं। ओडिशा में रुशिकुल्या नदी के मुहाने पर रिकॉर्ड सामूहिक घोंसलों का निर्माण भारतीय तटरक्षक के कठोर गश्त, हवाई निगरानी और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से लुप्तप्राय प्रजातियों की सुरक्षा में निरंतर प्रयासों का प्रमाण है।



ऑपरेशन ओलिविया की शुरुआत से लेकर अब तक, भारतीय तटरक्षक ने 5,387 से ज़्यादा सतही गश्ती उड़ाने और 1,768 हवाई निगरानी मिशन किए हैं, जिससे अवैध मछली पकड़ने और आवास में व्यवधान जैसे खतरों में काफ़ी कमी आई है। इस अवधि के दौरान, अवैध मछली पकड़ने में शामिल 366 नावों को हिरासत में लिया, जिससे समुद्री जीवन की रक्षा में भारतीय तटरक्षक की मजबूत प्रवर्तन भूमिका की पुष्टि हुई। निगरानी के अलावा, भारतीय तटरक्षक ने स्थानीय मछली पकड़ने वाले समुदायों के साथ सक्रिय रूप से कार्य किया है, जिसमें कछुआ बहिष्करण उपकरणों के उपयोग को बढ़ावा देना और टिकाऊ मछली पकड़ने की प्रथाओं और संरक्षण शिक्षा का समर्थन करने के लिए औपचारिक समझौता ज्ञापनों के माध्यम से गैर सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी शामिल है।



प्रकृति मित्र अवार्ड 2024-25

ओडिशा सरकार के माननीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री द्वारा दिनांक 05 जून 25 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कृषि शिक्षा सदन, ओडिशा कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय (Odisha University of Agriculture and Technology), भुवनेश्वर में भारतीय तटरक्षक स्टेशन गोपालपुर को प्रकृति मित्र अवार्ड 2024-25 से सम्मानित किया गया।

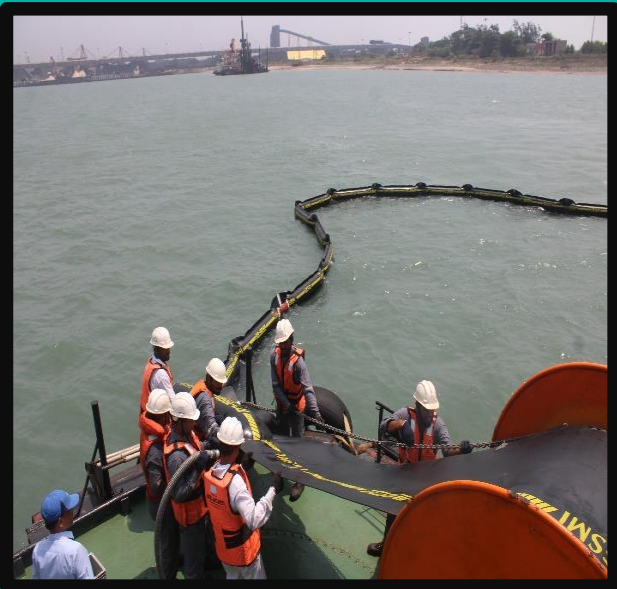
पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में भारतीय तटरक्षक बल के निरंतर प्रयासों को मान्यता प्रदान करते हुए यह सम्मान प्रदान किया गया। भारतीय तटरक्षक स्टेशन गोपालपुर के कमान अधिकारी, समादेशक (क. व.) शिवेंद्र वर्मा को इस अवार्ड के तहत एक प्रशस्ति पत्र एवं रुपये बीस हजार की नगद राशि प्रदान की गई। ओडिशा सरकार के माननीय मुख्यमंत्री इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।



तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की झलकियाँ















राजभाषा संबंधी लिंक

विवरण	लिंक
राजभाषा विभाग	rajbhasha.gov.in
केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान	chti.rajbhasha.gov.in
केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो	ctb.rajbhasha.gov.in
कंठस्थ संस्करण 2 - स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर	kanthasth.rajbhasha.gov.in
हिंदी शब्द सिंधु (संस्करण 2)	hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in
तिमाही प्रगति रिपोर्ट	qpr.rajbhasha.gov.in qpr.rajbhasha.gov.in/Users/Default.aspx
हिंदी स्वयं शिक्षण – लीला- प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ	lilappp.rb-aai.in/#!
लीला हिंदी प्रवाह	lilahinipravah.r-aai.in/#
ई-सरल हिंदी वाक्य कोश	narakas.rajbhasha.gov.in/saral/saral2.php
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग	www.cstt.education.gov.in

राजभाषा विभाग के 12 'प्र'



राजभाषा हिंदी का विकास
देश का विकास



राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती



राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह लोगो